20-8-2001

ज्ञान, योग, धारणा और सेवा में अलबेला नहीं अलर्ट बनो

आज भट्ठी में आई हुई सर्व कुमारियों की याद-प्यार लेकर बापदादा के पास पहुँची तो बापदादा ने हमेशा के मुआफ़िक सामने से दृष्टि देते मिलन मनाया और समाचार पूछा। मैंने सुनाया कि हमारी दादी को छोटी-छोटी कुमारियों प्रति बहुत प्यार रहता है, तो दो साल वाली कुमारियों को भी साथ में बुलाया है। इसलिए यह ग्रुप बहुत बड़ा दो हजार तक हो गया है। बापदादा बोले, दादी को चारों ओर का ख्याल अच्छा रहता है। जिम्मेवारी का ताज अच्छा फिट हो गया है। बापदादा तो सदा निमित्त बनी दादियों को रोज़ स्पेशल शाबास बच्ची, शाबास का वरदान देता है। सदा बल और फल देता है। इसके बाद बाबा बोले, इस ग्रुप को तो बापदादा भी देख-देख खुश होते हैं कि किसी भी रूप से, किसी भी भावना से त्याग तो किया ही है। तो त्याग और हिम्मत का फल तो इन सबका जमा है। अब एक त्याग तो किया - लौकिक सम्बन्ध, लौकिक दुनिया छोड़ दिया। उसकी बापदादा मुबारक देते हैं लेकिन अब त्याग की परिभाषायें कितनी लम्बी हैं वह भी जानते हैं ना? बच्चों को त्याग क्या करना है, त्याग किसको कहा जाता है, उसकी स्पष्टता तो बताई ही होगी ना! क्योंकि बापदादा बच्चों से यही चाहते हैं कि जिस श्रेष्ठ ब्रह्माकुमारी जीवन को अपनाया है, जो श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य रखा है, वह हर कार्य करते स्मृति में रहे। यह सदा चेकिंग हो कि मेरा सोचना, बोलना, चलना, करना लक्ष्य प्रमाण लक्षण भी हैं? क्योंकि ब्रह्माकुमारी बनना साधारण बात नहीं है। कोई रिवाजी टाइटल नहीं है, बड़ी ऊंची पर्सनैलिटी है, इसको साधारण नहीं समझना कि बी.के. तो बन गई लेकिन ब्रह्माकुमारी बनना वा कहलाना अर्थात् ब्रह्मा बाप समान बनना, हर कदम श्रीमत प्रमाण चलना, अपनी चलन से, चेहरे से बाप को प्रत्यक्ष करना। बापदादा सब मीठे-मीठे बच्चों से पूछते हैं कि देखने में छोटे हो लेकिन हिम्मत बड़ी रखी है, तो लक्ष्य और लक्षण समान है ना?

बापदादा को इस ग्रुप से विशेष प्यार है कि बड़े-तो-बड़े हैं लेकिन छोटे भी कम नहीं हैं, अवश्य बाप समान बन विश्व के सामने बाप को प्रत्यक्ष

करेंगे। यह ग्रुप श्रीमत पर चलने का, पान का बीड़ा उठाने वाला ग्रुप है। ऐसा बापदादा इस ग्रुप में उम्मीद रखते हैं। सच तो बापदादा ऐसे स्नेह और दिल से बोल रहे थे जो सुनकर मैं भी बापदादा को देखते-देखते मुस्करा रही थी कि वाह बाबा वाह, कितनी उम्मीदें इस ग्रुप में हैं। उसके बाद फिर बाबा बोले, सिर्फ एक बात बाबा बच्चों को कान में सुनाते हैं कि कभी भी अलबेलापन अपने में नहीं लाना कि हम तो छोटे हैं, किया, नहीं किया। नहीं। योग, ज्ञान, धारणा में अलबेला नहीं बनना लेकिन अलर्ट बनना है। सदा यही सोचो कि मुझे बाबा के दिल में प्यार का रिटर्न दिल से देने में नम्बरवन बनना ही है। देखेंगे, कोशिश करेंगे यह संकल्प स्वप्न में भी नहीं लाना है, करना ही है। कोमलता को छोड़ कमाल कर दिखाना ही है। ऐसे बाबा हर्षित हो बोल रहे थे जैसे सम्मुख में बड़ी हुज्जत और स्नेह से बोल रहे थे। मैं तो बाबा को देखती ही रह गई।

उसके बाद बाबा बोले, बच्ची मेरे नन्हे-से मीठे-मीठे रूहानी फूलों के लिए क्या सौगात ले जायेंगी! मैं बोली बाबा जो आप देंगे। बाबा बोले, बच्ची ब्रह्मा बाप के दिल पसन्द फूल लिली-फलावर (रजनी गंधा) थे। तो आज इन बच्चों को इन फूलों की गिफ्ट बापदादा दे रहे हैं। तो बहुत सारे फूल एक सुन्दर ट्रे में रखे हुए थे। हर एक फूल के ऊपर चमकीला पाउडर भिन्न-भिन्न रंगों का डाला हुआ था, जो बहुत अच्छा चमक रहा था और डाली उसकी लम्बी होती है और एक डाली में बहुत फूल लगे हुए होते हैं। ऐसे ही वतन में इमर्ज हुए तो हर एक फूल की डाली पर लिखा हुआ था - सदा संगठन, सम्मान और स्नेह को अविनाशी बनाना। ऐसे फूलों की डाली हर एक को बापदादा ने गिफ्ट में दी और हम आप सबकी याद देते वा लेते हुए साकार वतन में पहुँच गई।